गुणों को लेकर नहीं जन्मा है। युद्ध में उसकी प्रवृत्ति को आसुरी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसमें धर्म-अधर्म का विवेक विद्यमान था। वह विचार रहा था कि भीष्म, द्रोण, आदि गुरुजनों का वध करना चाहिए अथवा नहीं। इससे सिद्ध होता है कि वह क्रोध, अभिमान और निष्ठुरता के वशीभूत कर्म नहीं कर रहा था। भाव यह है कि वह आसुरी संपदा से युक्त नहीं था। क्षत्रिय के लिए शत्रु पर बाण चलाना दैवी संपदा के अन्तर्गत है; बल्कि अपने इस कर्तव्य से विमुख होना आसुरी संपदा है। अतः अर्जुन के लिए शोक का कोई युक्तिसंगत कारण नहीं है। जो वर्ण-आश्रम के अनुसार धर्म का पालन करता है, उसकी सदा दिव्य स्थिति है।

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु।।६।।

द्वौ=दो प्रकार के; **भूतसर्गौ**=प्राणियों की सृष्टि (होती है); **लोके**=इस संसार में; **अस्मिन्**=इस; **दैवः**=दैवी; **आसुरः**=आसुरी; **एव**=निःसन्देह; **च**=तथा; **दैवः**=दैवी; **विस्तरशः**=विस्तार से; **प्रोक्तः**=कही गयी; **आसुरम्**=आसुरी; **पार्थ**=हे अर्जुन; **मे**=मुझ से; **शृणु**=सुन।

अनुवाद

हे अर्जुन! इस संसार में दैवी और आसुरी—ये दो प्रकार के प्राणियों की सृष्टि होती है। उनमें दैवी गुणों का वर्णन विस्तार से कर चुका हूँ, अब मुझ से आसुरी गुणों का विवरण सुन।।६।।

तात्पर्य

अर्जुन को यह आश्वासन देकर कि वह दैवी गुणों में जन्मा है, भगवान् श्रीकृष्ण अब आसुरी स्वभाव का वर्णन करते हैं। इस संसार में बद्धजीवों की दो श्रेणियाँ हैं। एक तो वे हैं, जो दैवी गुणों को लेकर उत्पन्न होते हैं और शास्त्र-विधि के अनुसार आचरण करते हैं। उनके जीवन में शास्त्र और गुरु के आज्ञानुसार संयम रहता है। कर्तव्य-कर्म का आचरण प्रामाणिक शास्त्रों की विधि से ही करना चाहिए; यही दैवी स्वभाव है। जो शास्त्रविधि का उल्लंघन करके स्वेच्छाचार करता है, वह आसुरी कहलाता है। शास्त्र-विधि का पालन ही इस वर्गीकरण की एकमात्र कसौटी है। वैदिक शास्त्रों में कहा है कि देव और असुर दोनों प्रजापति से उत्पन्न हुए हैं। दोनों में भेद यही है कि एक वर्ग वैदिक-विधान को मानता है और दूसरा नहीं मानता।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते।।७।।

प्रवृत्तिम्=धर्म में प्रवृत्त होने को; **च**=तथा; **निवृत्तिम्**=अधर्म से निवृत्त होने को; **च**=भी; **जनाः**=मनुष्य; **न**=नहीं; **विदुः**=जानते; **आसुराः**=आसुरी स्वभाव वाले; **न**=न; **शौचम्**=शरीर और अन्तःकरण की शुद्धि; **न**=न; **अपि च**=तथा; **आचारः**=आचार; **न**=न; **सत्यम्**=सत्य-भाषण; **तेषु**=उनमें; **विद्यते**=होता है।